प्रातः क्लास 30-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। किसके याद में बैठे हो। यह है प्यारे ते प्यारा सम्बन्ध एक के साथ। जो सभी को दुःखों से छुड़ाने वाला है। बाप बच्चों को देखते हैं तो दुःख कटते जाते हैं। आत्मा सतोप्रधान तरफ जा रही है। दुःख तो अथाह है नां। गाते भी है दुःखहर्ता सुखकर्ता... अब बाप तुमको सच्च-2 सभी दुःखों से छुड़ाने आये है। स्वर्ग मे दुःख का नामोनिशा नही होता है। बिमारी आदि कुछ नही होती है। ऐसे बाप को तो याद करना बहुतजरूरी है। बाप का भी बच्चों पर प्यार है नां। यह तो जानते हो बाप का किन-2 बच्चों पर प्यार है। बच्चों को समझाया है कि अपने को आत्मा समझो देह-नही समझो। बच्चे तो तुम भी हो सारे दुनियां भी बच्चे है। कितने बच्चे नम्बरवार ध्यान मे आवेगे। जो अच्छी रीती चलते-फिरते बाप को याद करते है। यह भी क्यों कहते है क्योंकि तुम्हारा जन्म, जः से पापो का बोझा चढ़ा हुआ है। तो इस याद की यात्रा से ही तुम पापात्माओं से पुण्यात्मा बन जावेगे। आत्मा पुण्यात्मा बन जाती है यह तो तुम जानते हो कि पुराना तन है। दुःख आत्मा को ही होता है। शरीर को चोट लगने से आत्मा को दुःख फल होता है आत्मा कहती है कि मै रोगी हूं दुःखी हूं। यह तो है ही दुःख की दुनियां। कही पर भी जाओं तो दुःख ही दुःख है। सुखधाम मे तो यह दुःख हो नही सकते है। दुःख का नाम लिया तो गोया तुम दुखधाममे हो। सुखधाम मे तो जरा भी तकलीफ नही होती है। समय भी बाकी थोडा ही है। इसमे ही पुरा पुरुषार्थ करना है बाप को याद करने का। जितना-2 याद करते रहेगे उतना ही सतोप्रधान बनते जावेगे। पुरुषार्थ कर अवस्था ऐसी जमानी है जो कि तुम को पिछाडी मे सिवाय बाप के और कोई भी याद नही आवे। एक गीत भी है अन्त काल जो..... यह अन्त काल है नां। पुरानी दुनियां दुःखधाम का अन्त है। यह तुम्ही जानते हो। अभी तुम सुखधाम के लिये पुरुषार्थ करते हो तुम क्षुद्र से सो ब्राहमण बने हो। मनुष्य तो सभी क्षुद्र है। तुम अब ब्राहमण बने हो। यह तो याद रहना चाहिये नां क्षुद्रों को है दुःख हम दुःख से निकल फिर अब चोटी पर चढ़ते है। तो एक बाप को ही याद करना है। मोस्ट बिलवेड बाप हैं। इनसे मीठी चीज कोई और होती ही नही है इस दुनियां मे। आत्मा उस परमपिता परमात्मा को ही याद करती है। सभी आत्माओं का वो ही बाप है। उस जैसा मीठा और कोई हो नही सकता है। इतने सभी ढेर बच्चे है कितने मे याद आते होगे सेकिंड में। अच्छा सारी सृष्टी का चक्र कैसे फिरता है वो भी तो बुधी मे अर्थ सहित है। जैसे कोई ड्रामा देखकर आते है कोई पूछेगे तो ड्रामा याद है? हां कहने से ही सारा यादआ जावेगा शुरु से अन्त तक। बाकी वो वर्णन कर सुनाने मे तो सेकिण्ड नही लगेगा। उसमे तो समय लगेगा ही नां। बाकी 84 का चक्र बुधी मे तो सेकिण्ड मे आ जावेगा। बाबा बेहद का बाबा है। बाप की याद आने पर ही2। जन्मो का सुख (वर्सा) सामने आ जाता है। बाप से यह वर्सा मिलता है। सेकिण्ड मे बच्चे को बाप का वर्सा आ हीजाता है। बच्चा पैदा हुआ और बाप जान जाते है कि वर्सा ने जन्म लिया है। सारी मिलकियत याद आ जावेगी। तुम भी अकेले अलग-2 बच्चे हो नां। अलग-2 ही वर्सा मिलता है। अलग-2 ही याद भी करते हो। हम बेहद के बाप के वर्सा है। सतयुग मे तो एक ही बच्चा होता है। वर्सा पैदा हुआ वो सारी मिलकियत का वर्सा ठहरा। बाप भी ऐसे ही कहेगे कि बच्चा पैदा हुआ राजधानी का वर्सा बना। बच्चो को भी बाप मिला और विश्व के मालिक बने सेकिण्ड में। देरी नही लगती है। बाप कहते है कि तुम अपने को आत्मा (बच्चा) समझो। फीयले नही समझो। आत्मा तो शिव बाबा का बच्चा है नां। बाबा कहते है कि हमको सभी बच्चे याद पड़ते है। अर्थात आत्मायें याद आती है। आत्मायें सभी भाई-2 है। जो धर्म वाले आते है तो कहते है कि सभीधर्म वालो की आत्मायें भाई-2 है। परन्तु अर्थ को समझते नहीहै। अभी तुम तो समझते हो हम बाबा के मोस्ट बिलवेड बच्चे है। बाप से पुरा-2 बुहद का वर्सा जरुर लेगे। कैसे? वो भी तुम बच्चो को सेकिण्ड मे याद आ जाता है। हम सतोप्रधान थे। फिर तमोप्रधान बने है। फिर सतोप्रधान बनना है। बाप ने 84 जन्मो का चक्र भी बताया है। जानते हो बाप से हमको स्वर्ग के सुखो का वर्सा लेना है बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझो। देह तो विनाशी ही है। आत्मा ही शरीर छोड़ कर चली जाती है।

फिर जाकर दूसरा नया शरीर गर्भ मे ले लेती है। पुतला जब तैयार होता है तब आत्मा उसमे प्रवेश करती है। परन्तु वो तो है रावण के वश। विकारो के वश जेल मे जाते है। वहां पर तो रावण होता नही है। दुःख की बात ही नही। जब बूढ़े होते है तब पता पड़ता है। अभी हम शरीर छोड़ दूसरे मे जाकर प्रवेश करेंगे। वहां तो डर की कोई बात ही नहीं रहती। यहां तो कितना डरते हैं। वहां निडर होते हैं। डर काभी दुःख वहां नहीं होता। बाप तुमको आकर अपार सुखों मे ले जाते हैं। सतयुग मे अपार सुख है। कलियुग मे अपार दुःख है। इसलिए इनको कहते ही हैं दुःखधाम। बाप तो कोई भी तकलिफ नहीं देते हैं। भल गृहस्थ व्यवहार मे रहो। बच्चों आदि को सम्भालो। सिर्फ बाप को याद करो। गुरु गुसाई आदि जो भी हैं सभी को छोड़ो। मैं ते सभी गुरु से बड़ा हुं ना। वह सभी मेरी रचना हैं। सिवाय मेरे और कोई को भी पतित पावन नहीं कहेंगे। ब्रह्मा विष्णु शुकर को पतित पावन कहेंगे क्या। नहीं। कोई को भी नहीं कह सकते। देवताओं को भी नहीं कह सकते सिवाय मेरे। अभी तुम बच्चे गंगा को पतितपावनी कहेंगे? बिल्कुल नहीं। उनको पतित पावन कहना यह तो अति मुर्खता है। यहपानी की नदियां तो सदैव रहती ही है। गंगा ब्रह्मपुत्रा आदि यह नदियां तो चली आती है। उनमें स्नान करते ही रहते हैं। बरसात पड़ती है तो फ्लड्स हो जाते हैं। यह भी दुःख हुआ ना। अथाह दुःख है। देखो कितने मनुष्य मर गये। सतयुग मे दुःख की बात ही नहीं। जानवर भी दुःखी नहीं होता। उनका अकाले मृत्यु भी नहीं होता। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। भक्ति मार्ग मे गाते भी हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आप का बनेंगे आत्मा कहती है हम आप का बनेंगे। जब आप आवेंगे। आते हैं ना। दुःखधाम के अन्त और सुखधाम के आदि के बीच मे ही आवेंगे। परन्तु यह भी किसको पता नहीं। सृष्टि की आयु कितनी होती है यह भी कोई नहीं जानते। बाप बतलाते हैं कितना सहज है। आगे तुम जानते थे क्या सृष्टि की आयु 5000 वर्ष है। तो लाखों वर्ष कह देते हैं। अभी बाप ने समझाया है 1250 वर्ष का एक युग होता है। स्वस्तिका मे भी पूरे चार भाग होते हैं। जरा भी फर्क नहीं पड़ता। विवेक भी कहते हैं बराबर हिसाब होना चाहिए। पूरी मे भी हन्डा चढ़ाते हैं तो पूरा चार भाग आपे ही हो जाते हैं। उनकी ऐसी युक्ति रची हुई है। वहां चावल बहुत खाते हैं। जगतनाथ कहो या श्रीनाथ कहो बात एक ही है। दोनो काले भी हैं। श्रीनाथ के पास घी के भण्डारे होते हैं। सभी घी कीतले हुयेअच्छी2 चीजें मिलती है। बाहर मे दुकानलग जाता है। कितना भोग लगता होगा। सभी यात्रु जाकर उन दुकानों से लेते हैं। जगतनाथ पर फिर चावल ही चावल होते है। जगतनाथ वह श्रीनाथ। सुखधाम और दुःखधाम को दिखाते हैं। श्रीनाथ सुखधाम का था। वह दुःखधाम का। काले तो इस समय सभी बन गये हैं। काम चिक्षा पर चढ़ कर। जगत पर सिर्फ चावल, इनका गरीब और उनका साहुकार दिखाते हैं घी के सभी माल बनते हैं। वहां घी की बात नहीं। चावल भी अरबे बनते हैं। यह बाप बैठ बतलाते हैं। ज्ञान का सागर बाप ही है। भक्ति को कहा जाता है अज्ञान। उन से मिलता कुछ भी नहीं। हां सिर्फ गुरु लोग की आमदनी होती है। धंधा नहीं करते हैं तो खावेंगे कहां से। गुरु तो ढेर है ना। कोई बढ़ई बहुत होशियार होते हैं उनसे कोई सिखते हैं तो कहेंगे ना यह हमारा गुरु है। इसने हमको यह सिखाया। वह सभी जिस्मानी। जिस्म वाले गुरु। अभी तुम्हारे साथ कौन है। विचित्र। बाप कहते हैं यह मेरा शरीर नहीं है। यह तो तुम्हारे दादा का शरीर है। जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। उनके बहुत जन्मों के अन्त मे मैं प्रवेश करता हूं तुम सुखधाम ले जाने। इसको गऊ मुख कह देते हैं। गऊमुख पर कितना दूर2 जाते हैं। यहां भी गऊमुख है। अभी पहाड़ है। उसमें गऊका मुख बना दिया है। तो पहाड़ से पानी जरूर आवेगा ना। कुआं मे भी रोज पहाड़ से आता है। वह कब बन्द नहीं होता। पानी आता ही रहता है। वहां भी पहाड़ से पानी आता है। उनको कह देते हैं गऊमुख। गंगा जल कहते हैं। कहां से भी पानी आता है तो उनको गंगा जल कह कहते हैं। वहां जाकर स्नान करते हैं। तो यह झूठ ठहरा ना। पतित से पावन इस पानी से थोड़ेई बनेंगे। बाप तो कहते हैं पतित पावन तो मैं हूं। हे आत्माएं मामेक याद करो। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा निश्च

मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। बाप तुमको जन्म-जनमान्तरके पापों से छुड़ाते हैं। इस समय दुनिया में तो पाप ही पाप करते हैं। कर्मभोग ही कर्मभोग है। अगलेजन्म में पाप किया हैसो भोगते हो। 63 जन्मों का हिसाब किताब है। थोड़ा2 कला कमती होती जाती है। यह फिर है बेहद का दिन, बेहद की रात। अभी सारी दुनिया पर, उसमें भी खास भारत पर राहू की दशा बैठी हुई है। राहू का ग्रहण लगा हुआ है। अर्थात रावण का ग्रहण है। बाप है वृक्षपति। उन द्वारा तुम 16कला सम्पूर्ण हो जाते हो। तुम 16कला सम्पूर्ण थे। अभी कोई कला न रही है। फिर तुम सतोप्रधान बन रहे हो। यह भी समझाते हो मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। बाप ने समझाया है आत्मायें और परमात्मा अलग रहे बहुकाल ·· तुम पहले2 जुदा हो पार्ट बजाने आये हो। इसलिए गायन है आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम्हारा देखो यह कितना सुन्दर मेला है। तुम काले सांवरे से सुन्दर बन जाते हो। इसलिए कृष्ण को भी श्यामसुन्दर कहते हैं। सचमुच काला बना देते हैं। काम चिक्षपर चढ़ी तो वह निशानी दिखला दी है। परन्तु मनुष्यों की कुछ भी बुधि नहीं चलती। एक को सांवरा तो दूसरी को गोरा कर देते हैं। अभी तुम गोरे बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करेंगे तब बनेंगे। इसमें तकलीफ की बात ही नहीं। यह भी गीता है। बाप बैठ सुनाते हैं। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। भल गीता पढ़कर सुनावेंगे परन्तु यह ज्ञान तो सुना न सके। वह हुआ भक्ति भक्ति मार्ग के लिए पुस्तक। भक्ति मार्ग के लिए ढेर सामग्री है। ढेर शास्त्र हैं। राम के मंदिर में भी जाते हैं राम को भी काला कर दिया है। विचार करना चाहिए काला क्यों बनाते हैं। कानी कलकते वाली भी है। मां मां कह हैरान होते हैं। सभी से काली वह है। और बहुत भयानक दिखाते हैं। उसको भी माता कहते। ऐसी भयानक माताएं तुम ही हो। और कौन है। तुम्हारी यह ज्ञान बाण ज्ञान कटारी आदि है। उन्हों ने फिर वह हथियार दे दिया है। तलवार से सीस कटता है ना। तो वह सभी निशानियां दे दी हैं। असल में काली पर मनुष्यों का बल चढ़ता था। अभी गवर्मेन्ट ने बन्द कर दिया है। उन्हों को कहते थे आदम खोर। आदमी का मांस खाने वाले। आगे सिन्ध में देवीका मंदिर था नहीं। जब बम फटा तो एक ब्राह्मण निकला बोलो काली बने कहा हैआवाज़ किया है हमारा मंदिर है नहीं जल्दी बनाओ। नहीं तो और भी बम्स फटेंगे। बस ढेर पैसे इकट्ठे हो गये। और मंदिर बन गया। अभी देखो कितना मंदिर बना दिया है। कितनी ठगी है। बाप तुमको इन सभी बातों से छुड़ा देते हैं। किसकी ग्लानी नहीं करते हैं। समझाते हैं। बाप डायरेक्ट समझाते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे बना हुआ है। जो कुछ तुमने देखा वह फिर होगा। जो चीज़ न है वह बनती है। सतयुग में इन ल0ना0 का ही राज्य था। तुम समझ गये हो हमारा राज्य था। वह हमने अपना राज्य गंवाया। अभी फिर बाप देते हैं। हम नं से ना0 बनें। इसके लिए ही पुरुषार्थ करना पड़े। भक्ति मार्ग में तो तुम कथायें बहुत सुनते आये हो। अमरकथा, तिजरी की कथा। फिर अमर कुछ कोई बना? ज्ञान का तिसरा नेत्र मिला? यह बाप बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं इन आंखों से न देखो। सिवील आंख से देखो। क्रिमनल से नहीं। इस पुरानी दुनिया को न देखो। यह तो खलास हो जानी है। बाप कहते हैं मीठे बच्चों तुमको हम राज्य देकर जाते हैं 21 जन्म लिये। वहां और कोई राजा होता ही नहीं। दुःख का नाम नहीं। तुम बहुत सुखी और धनवान होते हो। यहां तो मनुष्य कितना भूख मरते हैं। वहां तो तुम सारे विश्व में राज्य करते हो। कितनी थोड़ी जमीन चाहिए। छोटा बगीचा। फिर वृधि होते2 कलियुग अन्त तक कितना बड़ा हो जाता है। और विकारों की प्रवेशता कारण वह कांटों का जंगल बन जाता है। बाप भी कहते हैं काम महाशत्रु है। इन से तुम आदि मध्य अन्त दुःख पाते हो। ज्ञान और भक्ति को अभी तुम समझा है। भक्ति को नर्क ज्ञान को स्वर्ग कहा जाता है। यह अच्छी रीत समझना है। विनाश सामने खड़ा है। इसलिए जल्दी2 पुरु0 करना है। बाप की याद से पाप कटेंगे। कल्प पहले जिन्हों ने पुरु0 किया है वह कर ही दिखावेंगे। ठंढे मत बनो। सिवाय बाप के और कोई को याद न करो। सभी दुःख देने वाले हैं। जो सदा सुख देते हैं उनको याद करना है। इसमें गफलत न करनी है। यान करेंगे तो पावन न बनेंगे। अच्छा गुडमार्